REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

"माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एंव बुद्धि स्तर में सम्बन्ध का अध्ययन"

प्रिया श्रीवास्तव
असिस्टेण्ट प्रोफेसर , बी0एड0–विभाग एस0एम0(पी0जी) कॉलेज चन्दौसी,
(एम0जे0पी0रु0 विश्वविद्यालय, बरेली) उत्तर प्रदेश।

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उ0प्र0 के जनपद – सम्भल की चन्दौसी तहसील के माध्यमिक विद्यालय बी0एम0जी0 इण्टर कॉलेज की कला एंव विज्ञान वर्ग की 200 छात्राओं का चयन किया गया। अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एंव बुद्वि स्तर में सम्बन्ध का अध्ययन करना। आँकड़ो के संग्रहण हेतु सुनील कुमार उपाध्याय द्वारा निर्मित सामाजिक आर्थिक स्तर स्केल एंव श्यामस्वरूप जलोटा द्वारा निर्मित सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण का प्रयोग किया गया। आँकड़ो के विश्लेषण हेतु सहसम्बन्ध (कॉर्ल पीयरसन प्रोडक्ट मूमेण्ट) का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणाम से ज्ञात हुआ कि माध्यमिक स्तर के विद्यालय की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एंव बुद्विस्तर में अत्यन्त निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है, अतः कहा जा सकता है कि छात्राओं का सामाजिक आर्थिक स्तर औसत से निम्न होते हुए भी छात्राओं का बुद्वि स्तर औसत से उच्च है।

माध्यमिक स्तर के विद्यालय की कला वर्ग की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एंव बुद्वि स्तर में निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालय की कला वर्ग की छात्राओं का सामाजिक आर्थिक स्तर उच्च होते हुए भी वे अपनी पढ़ाई के प्रति कम जागरूक है। माध्यमिक स्तर के विद्यालय की विज्ञान वर्ग की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्वि स्तर में में अत्यन्त निम्न ऋणात्मक सहसमबन्ध है एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालय की विज्ञान वर्ग छात्राओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण होने के कारण वे अपनी पढ़ाई के प्रति ज्यादा जागरूक है, और अपने सामाजिक आर्थिक स्तर को उच्च बनाने के लिए वे ज्यादा पढ़ना चाहती हैं।

प्रस्तावनाः

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के लिए विकास की पृष्टभूमि में उसके नागरिकों के बौद्विक विकास के स्तर का योगदान रहता है। सभ्य तथा विकासशील समाज ज्ञान और विवेक को सर्वोपरि स्थान देता है ।सभी विवेकशील विद्वानजनों का यह मानना है कि संसार में सभी सन्देह का निराकरण ज्ञान रुपी नेत्रों द्वारा ही सम्भव है।

उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य निम्नलिखित उद्देश्यों को वास्तविक रुप देना है –

माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

माध्यमिक विद्यालय की कला वर्ग की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

माध्यमिक विद्यालय की विज्ञान वर्ग की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की आवश्यकता:

प्रस्तुत शोध अध्ययन में छात्राओं का जो वर्ग लिया गया है, वह किशोरावस्था के अर्न्तगत आता है। किशोरावस्था में छात्राओं का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक विकास तेजी से होता है। किशोरावस्था में किशोरियों की बुद्धि का पूर्ण विकास हो जाता है। उनकी ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता बढ़ जाती है। स्मरण शक्ति बढ़ जाती है और उसमें स्वामित्व आने लगता है, साथ ही कल्पना, चिन्तन, तर्क, विश्लेषण, संश्लेषण और अमूर्त चिन्तन की शक्ति बढ़ जाती है और समस्या सामाधान की योग्यता का आर्थिक विकास हो जाता है परन्तु इसी अवस्था में छात्रायें संवेगात्मक रुप से बहुत अस्थिर होती है, क्योंकि इस अवस्था में उनमें व्यापक हार्मोन्स परिवर्तित होते हैं। ऐसे में परिवार की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का उनके मानसिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। सामाजिक–आर्थिक रुप से पिछड़ी छात्राओं का मानसिक विकास और सामाजिक विकास ठीक ढंग से नहीं हो पाता है। ऐसी छात्राओं को सही वातावरण व साधन न मिलने पर वह कुण्ठा से ग्रस्त हो जाती है। जिससे उनमें बुरी संगती में पड़ने का भय रहता है जिसका उनके मानसिक विकास पर भी दुष्प्रभाव पड़ने की सम्भावना बनी रहती है। इसी वस्तु स्थिति से उत्पन्न दशा माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में सम्बन्ध अध्ययन का विषय बनी।

परिकल्पनायें:

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निमित्त निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया–

H_1. माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

H_2. माध्यमिक विद्यालय की कला वर्ग की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

H_3. माध्यमिक विद्यालय की विज्ञान वर्ग की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

परिसीमन :

माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में सम्बन्ध का अध्ययन करने के लिए प्रस्तुत शोध अध्ययन को उ0प्र0 के जनपद सम्भल की तहसील–चन्दौसी, के माध्यमिक विद्यालय बी0एम0जी0 इण्टर कॉलेज की छात्राओं तक ही सीमित रखा गया है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के लिए उ0प्र0 के जनपद–सम्भल की तहसील चन्दौसी में स्थित माध्यमिक विद्यालय बी0एम0जी0 इण्टर कॉलेज की 100 कला वर्ग एवं 100 विज्ञान वर्ग की छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

उपकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सुनील कुमार उपाध्याय द्वारा निर्मित सामाजिक आर्थिक स्तर स्केल एवं डॉ0 श्याम स्वरुप जलोटा द्वारा निर्मित सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सहसम्बन्ध (कॉर्लपीयरसन प्रोडक्ट मूमेण्ट) का प्रयोग ऑकड़ों के विश्लेषण करने में किया गया।

विश्लेषण, परिणाम और व्याख्या :

प्रस्तुत शोध अध्ययन की गणना सारणी क्रमांक 1,2, और 3 में दी गयी है –

सारणी क्रमांक 1: माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं का सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर

छात्रायें	संख्या	मध्यमान		सहसम्बन्ध	df	सार्थकता स्तर	
		सा0आ0स्तर	बुद्धिस्तर			0.05	0.01
सम्पूर्ण न्यायदर्श	200	36.76	40.27	0.18	199	0.138	0.181

सारणी क्रमांक 1 से स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण न्यादर्श का सहसम्बन्ध 0.18 है, जोकि सार्थकता स्तर 0. 05 पर (0.138) से उच्च है, अर्थात 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में अत्यन्त निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है। अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में सार्थक सह सम्बन्ध है। इसी प्रकार सहसम्बन्ध (0.18) सार्थकता स्तर 0.01 पर (0.181) से निम्न है अर्थात 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में अत्यन्त निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है। अतः 0.01 सार्थकता स्तर पर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में सार्थक सहसम्बन्ध है।

सारणी क्रमांक – 2 माध्यमिक विद्यालय की कला वर्ग की छात्राओं का सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर

छात्रायें	संख्या	मध्यमान		सहसम्बन्ध	df	सार्थकता स्तर	
		सा0आ0स्तर	बुद्धिस्तर			0.05	0.01
कला वर्ग	100	33.81	30.12	0.36	99	0.195	0.254

सारणी क्रमांक 2 से स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण न्यादर्श का सहसम्बन्ध 0.36 है, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर (0.95) से उच्च है, अर्थात 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। इसी प्रकार सहसम्बन्ध (0.36) सार्थकता स्तर 0.01 पर (0.254) से उच्च है अर्थात 0.01 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में अत्यन्त निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है। अतः 0.05 स्तर पर एवं 0.01 स्तर पर माध्यमिक विद्यालय की कला वर्ग की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में सार्थक सह सम्बन्ध है।

सारणी क्रमांक – 3 माध्यमिक विद्यालय की विज्ञान वर्ग की छात्राओं का सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर।

छात्रायें	संख्या	मध्यमान		सहसम्बन्ध	df	सार्थकता स्तर	
		सा0आ0स्तर	बुद्धिस्तर			0.05	0.01
विज्ञान वर्ग	100	39.76	50.41	–0.027	99	0.195	0.254

सारणी क्रमांक 3 से स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण न्यादर्श का सहसम्बन्ध –0.027 है, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर (0.195) से भिन्न है, अर्थात 0.05 स्तर पर सार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। इसी प्रकार सहसम्बन्ध (–0.027) सार्थकता स्तर 0.01 पर (0.254) से निम्न है अर्थात 0.01 स्तर पर सार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में अत्यन्त निम्न ऋणात्मक सहसम्बन्ध है अतः 0.05 स्तर पर एवं 0.01 स्तर पर माध्यमिक विद्यालय की विज्ञान वर्ग छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धिस्तर में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

निष्कर्ष :

ऑकडों की व्याख्या परिकल्पनाओं को आधार मान कर की गई है। अतः परिणाम भी परिकल्पनाओं के आधार पर प्राप्त हुए है जो कि निम्नलिखित है–

1. माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धिस्तर में अत्यन्त निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है, अर्थात छात्राओं का सामाजिक आर्थिक स्तर औसत से निम्न होते हुए भी छात्राओं का बुद्धि स्तर औसत से उच्च है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालय की छात्रायें अपनी पढ़ाई के प्रति अधिक जागरुक हैं, उनका सामाजिक आर्थिक स्तर निम्न होते हुए भी वे अपनी पढ़ाई को ज्यादा महत्व दे रही हैं।
2. माध्यमिक विद्यालय की कला वर्ग की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धिस्तर में निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है, अर्थात छात्राओं का बुद्धि स्तर औसत से निम्न श्रेणी का होते हुए भी समाजिक आर्थिक स्तर औसत से उच्च श्रेणी का है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालय की कला वर्ग की छात्राओं का समाजिक अर्थिक स्तर उच्च होते हुए भी वे अपनी पढ़ाई के प्रति कम जागरुक हैं।
3. माध्यमिक विद्यालय की विज्ञान वर्ग की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि स्तर में निम्न ऋणात्मक सहसम्बन्ध हैं। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान वर्ग की छात्राओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण होने के कारण भी वे अपनी पढ़ाई के प्रति ज्यादा जागरुक नहीं हैं किन्तु वे अपने सामाजिक आर्थिक स्तर को उच्च बनाने के लिए ज्यादा पढ़ना चाहती है।

शैक्षिक निहितार्थ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणामों के आधार पर प्रकाण्ड विद्वानों, उच्चकोटि के शिक्षाविदों एवं शिक्षाजगत से जुडे महापुरुषों के सुझाव निम्नलिखित हैं –

1. औसत से निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर में गुणात्मक सुधार हेतु वह समस्त उच्च कोटि के संसाधन उपलब्ध होने चाहिए जो कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर की छात्राओं को प्राप्त होते हैं।
2. हमारा देश लोकतान्त्रिक गणराज्य है। लोकतन्त्र स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातत्व पर बल देता है। इस आधार पर सभी स्तरों की छात्राओं को समान शैक्षिक अवसर प्राप्त होने चाहिए।
3. हमारे देश में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ी जाति और अब सवर्ण जाति को भी आरक्षण प्रदान किया गया है। जबकि श्रेष्ठ यह रहेगा कि आरक्षण जाति आधारित न होकर आर्थिक आधार पर होना चाहिए क्योंकि प्रत्येक जाति में उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक अर्थिक स्तर के लोग रहते हैं।

सन्दर्भ :

1. सक्सेना एन0आर0 स्वरुप : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, आर0लाल0 बुक डिपो मेरठ, 2008।
2. मंगल एस0के0 : सामाजिक शिक्षा के आधार, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, 1986।
3. श्रीवास्तव डी0एन0 : अनुसंधान विधियाँ, साहित्य प्रकाशन आगरा।
4. सिंह लाल साहब : मापन मूल्यांकन एवं सांख्यिकी, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
5. बुच0एम0बी0 : फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूके"ान, 1983–88, एन0सी0ई0आर0टी0 वॉल्यूम वन।

प्रिया श्रीवास्तव
असिस्टेण्ट प्रोफेसर , बी0एड0–विभाग एस0एम0(पी0जी) कॉलेज चन्दौसी, (एम0जे0पी0रु0 विश्वविद्यालय, बरेली) उत्तर प्रदेश।